

ओमशान्ति मीडिया

वर्ष - 28

अक्टूबर - 2026

अंक - 10

माउंट आबू

Rs.- 20

ऐसा शुद्ध, आध्यात्मिक वातावरण हर स्थान पर हो, तो भारत विश्व गुरु बन जाए : संतजन



ज्ञान सरोवर माउंट आबू(राज.)।

महामण्डलेश्वर श्री 1008 स्वामीविजय कुमार महाराज कुलपति, स्मिथ्सोनियन एंड वेलनेस यूनिवर्सिटी इंदौर ने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान जन-जन में शांति का पैगाम देती है। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना चरितार्थ होगी जब व्यक्ति शांत होगा। ब्रह्माकुमारी संस्थान विश्व को राजयोग की और आध्यात्मिक ज्ञान की शिक्षा दे रहा है। यही वास्तव में समाज के हर वर्ग के लिए हौलिंग का कार्य करेगी। ये ब्रह्माकुमारियां ही सही अर्थों में शिव शक्तियां हैं जो विश्व में शांति लाने का प्रयास कर रही हैं। आचार्य महामण्डलेश्वर संत श्री कमल किशोर महाराज, दिव्य शक्ति अखाड़ा, सहारनपुर ने कहा कि 70,000 सर्मापित ब्रह्माकुमारियां जो चैतन्य जगे हुए, आध्यात्मिक दीप की तरह अपना प्रकाश 140 देशों में फैला रही हैं, तो निश्चित रूप से विश्व में शांति

होने ही है। मन का प्रदूषण दूर होगा ही राजयोग की साधना से। ब्रह्माकुमारी के द्वारा जो राजयोग सिखाया गया है, वह है ही मनजीते-जगतजीत। मन में जो व्याप्त विकार हैं, बुराईयां हैं, स्वयं की ज्ञानेन्द्रियों, कर्मेन्द्रियों पर अधिकार

नहीं समझ पा रहा है। अभी वर्तमान समय कलयुग का अंत और नई दुनिया सतयुग के आगमन का समय है। स्वामी श्री दिनेश महाराज, फलाहारो बाबा, अध्यक्ष श्री कृष्ण जन्मभूमि संघर्ष न्यास मथुरा ने कहा कि ऐसा शुद्ध,

माउंट आबू, ज्ञान सरोवर परिसर में 'आध्यात्मिकता एवं सत्त्विकता के तत्त्व से वैदिक सभ्यता' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में...

70,000 सर्मापित ब्रह्माकुमारियां जो चैतन्य जगे हुए, आध्यात्मिक दीप की तरह अपना प्रकाश 140 देशों में फैला रही हैं - कमल किशोर जी महाराज

कालचक्र की घड़ी में अभी क्या बज रहा है वो जानने की आवश्यकता : मनोरमा दीदी
तहाँ जैसी पवित्रता, दिव्यता हर जगह दिखाई दे तो संसार श्रेष्ठ बन जाए - दिनेश महाराज जी

पाना ही राजयोग है। धार्मिक प्रभाग की अध्यक्ष राजयोगिनी ब्र.कु. मनोरमा दीदी ने कहा कि अध्यात्म द्वारा संचित ख्यालात ही वर्तमान समय के हालात को बदल सकते हैं। समय की घड़ी को तो देखते हैं, लेकिन कालचक्र की घड़ी में अभी क्या बज रहा है यह कोई भी

आध्यात्मिक वातावरण अगर हर स्थान पर हो जाए, तो ये भारत विश्व गुरु बन जाए। ब्रह्माकुमारी संस्थान में जो ये पवित्रता, शुद्धता, दिव्यता दिखाई दे रही है, जन-जन में ये व्याप्त हो तो ये संसार श्रेष्ठ बन जाए। महामण्डलेश्वर रमणपुरी जी महाराज, श्री निरंजनी



नई दिल्ली। रक्षाबंधन के अवसर पर राष्ट्रपति भवन में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू को फूलों का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी। साथ है ब्र.कु. निकिता तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।



नई दिल्ली। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को रक्षासूत्र बांधते हुए ओआरसी निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी। साथ है राजयोगिनी ब्र.कु. पुष्पा दीदी, पाण्डव भवन, दिल्ली तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

पंचायती अखाड़ा, प्रयागराज ने कहा कि यहाँ ब्रह्माकुमारी की पवित्रता, अखंडता, ऊर्जा को लेकर और अधिक संख्या में अगले साल और भी लोगों को प्रेरित करके यहाँ ब्रह्माकुमारी के साथ जोड़ना चाहिए। स्वामी अकामानंद गिरि जी महाराज, श्रीकृष्ण परमधाम आश्रम, हरिद्वार ने कहा कि आत्मज्ञान, सत्य ज्ञान से ही जीवन में चैन प्राप्त हो सकता है। ब्रह्माकुमारी संस्थान के महासचिव राजयोगी ब्र.कु. करुणा ने

कहा कि इस आध्यात्मिक संस्था में आकर ही मैंने जाना कि मैं ये देह नहीं, वरन मैं इस देह को चलाने वाली चैतन्य आत्मा हूँ और मेरा पिता वो महाज्योति जिसे हम प्यार से शिवबाबा कहते हैं। वो ही सर्व आत्माओं का पिता है। कार्यक्रम में महामण्डलेश्वर आचार्य परमानंद जी महाराज, सतना, राजयोगी ब्र.कु. रामनाथ, मुख्यालय संयोजक, धार्मिक प्रभाग, माउंट आबू ने भी अपने विचार रखे।

अब मानव बुद्धिमत्ता और चेतना से डेटा को दिव्यता की ओर ले जाने का समय

ज्ञान सरोवर-माउंट आबू(राज.)। ब्रह्माकुमारी के मुख्यालय माउंट आबू में आयोजित "अनुसंधान एवं नवाचार में चेतना का समावेश" विषयक सम्मेलन एवं मेडिटेशन सट्रीट में विज्ञान, तकनीक, शिक्षा, भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता के समन्वय पर गहन विचार-विमर्श हुआ। देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए विशेषज्ञों ने कहा कि तकनीकी प्रगति को मानव कल्याण की दिशा देने के लिए उसमें मानवीय चेतना, मूल्य एवं आध्यात्मिकता का समावेश आवश्यक है। दिल्ली टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी के वाइस चांसलर प्रो. प्रतीक शर्मा ने बताया कि रिसर्च में ईमानदारी और सच्चाई के सिद्धांत ही वैज्ञानिक रिसर्च की विश्वसनीयता, भरोसेमंदता और विकास का आधार बनते हैं। हमें बौद्धिक ईमानदारी, रिसर्च की ईमानदारी और वैज्ञानिक कदाचार की अवधारणाओं पर फिर से विचार करने और कदाचार के तीन मुख्य प्रकार तथा उनके नैतिक, शैक्षणिक और सामाजिक महत्त्व को समझने की जरूरत है। पद्मश्री उदय विश्वनाथ



देशपांडे, मल्लखंब के प्रख्यात प्रशिक्षक एवं "मल्लखंब विश्वगुरु" के रूप में विख्यात ने कहा कि "मल्लखंब केवल खेल नहीं, भारत की प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर और व्यक्तित्व परिवर्तन का माध्यम" कि भारत ने

विश्व को गणित में शून्य, संस्कृत, योगशास्त्र और तक्षशिला जैसी अनेक अमूल्य देन दी है। उन्होंने बताया कि मल्लखंब से एकाग्रता, साहस, समन्वय, प्रहण क्षमता और स्मरणशक्ति जैसी क्षमताओं

का विकास होता है। डॉ. हरि कृष्ण मरम, विजन डिजिटल इंडिया के बॉर्ड एंबेसडर, चेयरमैन, फाउंडर चेयरमैन, इंपीरियल कॉलेज, वाइस चांसलर, ग्लोबल डिजिटल यूनिवर्सिटी, यूएसए ने कहा कि "आज डेटा से डील बन रहे हैं, अब मानव बुद्धिमत्ता और चेतना से डेटा को दिव्यता की ओर ले जाने का समय"। उन्होंने कहा कि अब केवल ऑर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर ध्यान देने के बजाए ह्यूमन इंटेलिजेंस को अधिक महत्त्व देने की आवश्यकता है। राजयोगी ब्र.कु. करुणा, सेक्रेटरी जनरल, ब्रह्माकुमारी ने कहा कि "शिक्षा का लक्ष्य केवल धन कमाना नहीं, जीवन में मूल्यों और आध्यात्मिक चेतना का विकास होना चाहिए"। स्पर्क प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. अंबिका दीदी ने स्पर्क प्रभाग के राष्ट्रीय सम्मेलन के लक्ष्य और उद्देश्य पर प्रकाश डाला। ब्र.कु. श्रीकांत, स्पर्क प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक ने स्पर्क प्रभाग की सेवाओं से अवगत कराया। राजयोगिनी ब्र.कु. अलका दीदी ने राजयोग का अभ्यास कराया।